f’kokuh dh dgkfu;ksa esa ukjh thou dk fp=.k

’kks/kFkhZ % fdj.k ckykbZ] esokM+ fo’ofo|ky;

fprkSM+x<+] jktLFkku

‘kks/k funsZ’kd % MkW- ih;w"k dqekj ‘kekZ

मेवाड़ विश्वविद्यालय, चितौड़गढ, राजस्थान, भारत

सारांष :

मेरे शोध पत्र का उद्‌देश्य शिवानी की कहानियों में नारी चरित्रों का अध्ययन है। शिवानी ने कहानियों में नारी मन को बड़ी गहराई से अनुभूत किया हे। उनकी कहानियों में नारी की पीड़ा, प्रेम, हर्ष ईर्ष्या, विवशता, त्याग एवं मुक्ति का स्वर है। नारी पात्र अपनी परिस्थितियों में अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु संघर्षरत है। शिवानी जी ने नारी की कमजोरियों – सीमाओं एवं शक्तियों को पहचानकर निष्पक्ष रूप से चित्रित किया है। शिवानी जी नारी को भारतीय संस्कारों का पालन करते हुए अपने स्वाभिमान की रक्षा करने वाली समर्थ सबला नारी के रूप में देखना चाहा है। उन्होंने नारी के विविध रूपों – परम्परागत नारी, प्रगतिशील, वैधव्यदग्ध नारी, वेश्या, अपराधिनी आदि का चित्रण किया है।

ewy ‘kCn % f’kokuh] dgkuh] ukjh] thou] fp=.k %

प्रस्तावना : शिवानी जी स्वातंत्र्योत्तर काल के हिन्दी साहित्य की बहुचर्चित महिला कहानीकार एंव कालजयी रचनाकार है। उनकी रचनाएँ उसी काल विशेष की प्रवृत्ति से बंधनकर नहीं अपितु दीर्घकालिक मनुष्य चेतना को पथ प्रदर्शित करती है। उनकी कहानियों के विषय–वस्तु तत्कालिक होते हुए आज भी प्रासंगिक है।

शिवानी जी की नारी के अंर्तमन में गहरी पैठ हैं इनकी कहानियों में नारी जीवन का बाह्‌य और आंतरिक जगत का कोना –कोना झांक आती है। उनकी कहानियों में नारी के मन की कुंठा, दो पीढियों का संघर्ष एंवं नैराग्य का भाव दिखाई देता है। उनकी कहानियों के पात्र विपरीत परिस्थितियों के प्रति संघर्षरत है और अपने अस्तित्व को प्रमाणित करने हेतु सचेष्ट हैं उन्होंने अपनी कहानियों में नारी के विविध रूपों यथा – परम्परागत नारी, आधुनिक नारी, विधवा नारी, वेश्या, पतित एवं अपराधिनी नारी का चित्रण किया हैं । शिवानी की कहानियों में परम्परागत नारी, पात्र है जो भारतीय संस्कृति और संस्कारों को छोड़ना नहीं चाहती है। उनका पालन करने में उन्हें सुख – संतुष्टि की प्राप्ति होती है उनका कल्याण इनके पालन में है ऐसी है। ''पिटी हुई गोट'' 'की चन्दों' आदर्श नारी पात्र है। वह गरीब परिवार से हैं उसके दरिद्र माता–पिता की मृत्यु अंग्निकांड में हो जाने पर समाज और बिरादरी वाले उसका विवाह तिरसठ वर्षीय गुरूदास से करवा देते । चन्दों अठारह वर्ष की थी वय के इस अंतराल के कारण गुरूदास सदैव शंकित रहते है। गुरूदास चन्दों के सौम्य स्वभाव के कारण उससे प्रेम करता था। किन्तु उसे अपने पति से प्रेम कम कृतज्ञता ही अधिक थी। गुरूदास दीपावली की रात्रि को जुआ में आठ हजार रूपये और दुकान हार जाता है। अंतिम दाव में वह सबकुछ पुनः हासिल करने के लिए अपनी पत्नी को दाव पर लगाता है वह उसे भी हार जाता है। वह इस पराजय को बर्दाश नहीं कर पाता है और ताल में कूदकर आत्महत्या कर लेता है। किन्तु चन्दों का दर्द कोई नहीं समझ सकता है।

आधुनिक नारी पात्र की श्रृंखला में 'उपहार' कहानी की पात्र डॉ नलिनी है जो सबकुछ त्यागकर रघुनाथ से प्रेम विवाह करती है । दोनों प्रेमपूर्वक जीवन यापन करते हैं। एक दिन अस्पताल के दौरे पर ट्रेन में एक लम्बा खवीस गहने लूट कर चला जाता है। डॉ नलिनी के घर लौटने से पहले ही अखबार के द्वारा उसके पति तक खबर पहुँच जाती है। वह व्यंग्यात्मक दृष्टि से देखता है। इसी बीच वह गर्भ से रहती है । वह रघुनाथ से बताती है – रघुनाथ अविश्वास के कारण कहता है ''डाकू की सन्तान मेरे घर में नहीं पलेगी।' मैं क्रोध से बौखला गई । ढलती उम्र में मातृत्व का कैसा गहरा मूल्य चुकाना पड़ेगा, उसकी चिन्ता मुझे जा रही थी, उस पर शक्की रघुनाथ का निर्वार्थ क्रोध मुझे पागल बना गया। ''मेरा घर से है निकल जाओ बाहर, तुम कमीने पशु हो।[1] वह रघुनाथ को छोड़कर अलग रहती है। यहाँ परिवार के टुटन को दशाया गया है। अहं, अविश्वास के कारण, पति–पत्नी में तनाव होने पर वह पति को छोड़ देती है। आत्मनिर्भर होने के कारण पति के साथ रहने की मजबूरी नहीं है। नारी मुक्ति की दिशा में यह एक कदम है।

'मन का प्रहरी में शिक्षिका अनुराधा बीस वर्षीय छात्र महंती से विवाह करती है। आर्थिक कठिनाईयों में जीवन जीने वाला महंती अपनी पत्नी से संतुष्टि था। किन्तु अनुराधा विवाह से मिली असंतुष्टि पर पश्यातात करती है और उसे छोड़ने को निर्णय लेती है। तब वह पत्र में लिखती है ''संसार की कोई भी शक्ति हम दोनों के बीच वयस की इस दूरी को पाट नहीं सकती है। तुम्हारे लड़कपन को मेरे पौढ़ अनुभव का धैर्य कभी नहीं जीत पाया।''[2] वह मंहती को छोड़कर अपने पूर्व प्रेमी मधुकर के पास चली जाती है। मंहती को नशे की लत लग जाती है। शिवानी के नारी पात्र आत्मनिर्भर है। वह किसी भी संबंध को झेलना नहीं, वह मुक्त होना चाहती है। यहाँ रूढ़िवादी परम्परागत मूल्यों पर प्रहार किया गया है। वह घुटन भरी जीवन जीने के स्थान पर स्वच्छंद जीवन का चुनाव करती है।

'भिक्षुणी, उर्फ जिद्दी स्वभाव एवं स्वच्छंद विचारों वाली नारी थी। वह पुलिस अधिकारी की बेटी थी। पुलिस अधिकारी पिता के मित्र रिपदुमनिया से राखी बँधवाकर मुँह बोला भाई बना बैठती है। किन्तु इस संबंध की आड़ में दूसरा संबंध पनप रहा था। ज्ञात होते ही पिता और मौसी मिलकर उसकी इच्छा के विरूद्ध उसका विवाह करवा देते है। पति का स्वभाव बहुत भला था किन्तु ननद का टोकना उसे बर्दाश नहीं होता था। वह स्वभाव से जिद्दी थी। ''फिर एक दिन अचानक सुना, अपनी समृद्ध गृहस्थी को स्वयं लात मारकर किकी अपने कैशार्य के प्रेमी के साथ मुँह काला कर भाग जाती है।''[3] उसने अपने बेटी–बेटे के बारे में कुछ नहीं सोचा अपने पृित कुल और ससुर कुल को कलंकित कर पारिवारिक विघटन का कारण बनी। कुछ वर्ष बाद रिपदुमन अध जली किकी का शव पिता के घर लेकर आता है। पिता बिना पुत्री का मुख देखे अंतिम संस्कार कर देते हैं। अंत में वह भिक्षुणी बन जाती है। किकी का विवाहोत्तर संबंध उसके जीवन को विनष्ट कर देता है।

''भीलनी, सुहासिनी विद्रोहिणी नारी का व्यक्तित्व है। सुहासिनी का पति गौतम जब उसकी बहन बिलासिनी से अनैतिक संबंध रखता है, तो वह आवेश में आकर अपनी बहन की हत्या करना चाहती है पर निशाना चुक जाने से पति की हत्या हो जाती है। वह अपनी बहन को भाग जाने को कहती है। अपने पति की हत्या करती है। अपने आखिरी बयान में बहन का नाम नहीं लेती है वह कहती है '' मेरे पति की बाँहें में एक अर्द्धनग्न काली –कलूटी भीलनी पड़ी सो रही है। मैं क्रोध से एक क्षण को विवेक खो बैठी। भागकर भरी रिवाल्वर निकाली मारना चाहा था। भीलनी सौत को पर निशाना चुक गया अंकल, I was always a poor shot, मैं पक्की निशानेबाज कभी नहीं रही''[4] बयान के आधे घंटे बादा सुहासिनी मर जाती है। सुहासिनी पति की उपेक्षा एवं अनैतिक संबंध के कारण विद्रोह करती है किन्तु क्रोध की भावना में भी वह अपनी बहन का नाम नहीं लेती है। वह अपनी बहन को भी 'भीलनी' कहकर निर्दोष छोड़ देती है। 'गहरी नींद' कहानी में दो केन्द्रीय पात्र है। उमा यादव और अख्तरी। अख्तरी अपने पति के साथ अफीम – गाँजा का धंधा करती थी पति के पकड़े जाने पर उसे 'होम फॉर फालेन वीमन' में भेज दिया जाता है। उमा अख्तरी को कठिन परिश्रम और धैर्य से कीचड़ से बाहर निकालती है। अख्तरी जिद कर उमा के साथ उसके घर में रहने लगती है। किन्तु एक दिन अचानक उसे मौसी को देखने जाना पड़ता है। लौटकर देखती है कि अख्तरी को अपने पति के साथ सोते पकड़ लेती है। पति सॉरी कहकर करवट बदल लेता है। इस घटना के बाद अख्तरी घर छोड़ कर चली जाती है। उमा की शांति भंग हो गई थी। चार रातों तक नींद न आने के कारण नींद की गोलियां खाकर आत्महत्या कर लेती है। और दूसरी ओर अख्तरी पुनः वही जीवन अपना निश्चिन्त मस्त नींद में डूब जाती है।

'अनाथ' कहानी में ऐनी एक कुष्ठ रोग माँ की पुत्री है। वह साहसी और निर्भीक है। उसके साहस और सौंदर्य से प्रभावित होकर युवक बनर्जी घर वालों से छुप कर विवाह कर लेता है। किन्तु लीलधर नामक पंडित विवाह की सूचना बनर्जी के पिता को दे देता है। पिता ने उसे बुलाकर विदेश भेज दिया जहाँ वह पुनः विवाह कर लेता है। ऐनी को बनर्जी से बच्चा होता है जिसे वह हिन्दू अनाथाश्रम छोड़ में देती है। ऐनी को अब भी विश्वास है कि बनर्जी कभी दूसरा विवाह नहीं करेगी। ऐनी बनर्जी के हृदय की साम्राज्ञी बनकर राज करना चाहती है। जिस पुरूष ने उसे निर्ममता से फेंक दिया उस पर उसका कितना अगाध विश्वास था। ऐनी का जीवन संघर्ष पूर्ण है। वह कारूणिक पात्र है। 'जोकर' कहनी का प्रमुख केन्द्रीय पात्र तिलोत्तमा है। इस कहानी में उसकी मानसिक पीड़ा की अभिव्यक्ति हुई है। जब वह बौने पुत्र को जन्म देती है, तब उसके पुत्र को अलग कमरे में रख दिया जाता है। पति–पत्नी के सम्बंधों में कटुता आ जाती थी। वह रोती गिड़गिड़ती हुई कहती है '' यह कैसा दण्ड दे रहे हो मुझे। पुत्र के कमरे में भी नहीं सो सकती और पति के कमरे में भी नहीं ।'' [5] जब पुत्र की आयु बढ़ने लगती है तो पति उसकी भयानक, बेसुरत आकृति देखकर बिना अपनी पत्नी को बताये सर्कस कंपनी में भर्ती करा आता है। तिलोसमा अपने पुत्र की खोज में सर्कस कम्पनी को भटकती फिरती है किन्तु उसे निराशा ही हाथ लगती है। इस कहानी में नारी के मातृत्व रूप और आंतरिक पीड़ा की अभिव्यक्ति हुई है। 'निर्वाण' कहानी में विवाहित मनोरमा प्रमुख नारी पात्र है। वह एक कर्त्तव्यपरायण पत्नी बहु एवं माँ थी। किन्तु अपने गुरूदेव के मोहक व्यक्तित्व से प्रभावित होकर घर परिवार की

तजांलि देकर देश –विदेश में धार्मिक अनुष्ठानों में गुरूदेव के साथ घुमती है। इसी से उसके दाम्पत्य जीवन में दरार पड़ जाती है। जो अखबार गुरूदेव के प्रशंसा में स्तुतिगान करते थे आज उनके पाखंड का भाड़फोड़ रहे हैं। '' उसकी तस्करी की कहानियाँ, भोली–भाली युवतियों को ही नहीं, अनेक सुशिक्षित आधुनिकाओं को भी अपने सम्मोहन – पाश में बाँधने को रंगीन विवरण कई विदेशी चेले –चपाटों की लूटपाट, उन्हें पथ का भिखारी बना देने का लेखा पढ़कर भी मुझे सबकुछ अधूरा – सा ही लगा था, क्योंकि उनकी जिस शिष्या ने, उन्हें दीक्षा की सबसे गहरी दक्षिणा दी थी, उस अभागिनी का नाम मुझे कहीं ढुढ़ने पर भी नहीं मिला।''[6] कहानी में आधुनिक संत–महात्माओं के चक्कर में पड़कर अपने दांपत्य जीवन को विनष्ट करने की सत्य घटना का चित्रण है।

''तोप'' स्वार्थी तथा प्रगतिशील नारी चरित्र है। वह रेस्ट हाउस की मालकिन हे। सेनेटोरियम से छुट्टी मिलने वाले, मरीजों को वह रेस्ट हाउस में किराया पेशगी लेकर केवल पुरूषों को रखती है। रेस्ट हाउस में चार मरीज हे। मगनदास, छगनदास पटेल, राधेश्याम माहेश्वरी और राजेन्द्र थे। सभी मरीज ठीक होकर चले जाते हैं केवल राजेन्द्र नामक प्रतिभाशाली वैज्ञानिक से तोप पचास वर्ष की आयु में विवाह कर उसे ताजमहल दिखाने आगरा लेकर जाती है। राजेन्द्र की मृत्यु होने पर वह फूल चढ़ाने हरिद्धार जाती है। राजेन्द्र की मृत्यु के बाद लेखिका उसे अपने घर चलने का आग्रह करती है तब तोप प्रति उत्तर में कहती है कि '' खुदा बाप क्या मुझे अकेली रहने देगा ? एक गरीब मरीज उसने फिर भेज दिया है ..... फिर चैरिटी। ..... बड़ा होनहार लड़का है सैम्युअल, मेडिकल कालेज में आखिरी साल है।''[7] तोप अपने नये मरीज प्रेमी से विवाह कर लेती है। उसका चरित्र स्वार्थी नारी का है वह एक से अधिक युवाकों से विवाह कर जीवन यापन करती है। प्रगतिशील नारी नैतिक मान्यताओं का विरोध कर अपनी इच्छा के अनुरूप प्रेम एवं अवैध संबंध स्थापित करती है। 'माई' कहानी की नायिका रूक्की पन्द्रह वर्षीय विधवा है। सोलह वर्ष की आयु में चारों धाम की यात्रा कर आई थी। वह कुम्भ के मेले में खो गई थी। फिर तीन वर्ष उपरांत गुरू से दीक्षा प्राप्त कर अपने गाँव देवी बन कर लौटी है। एक विशाल वृक्ष के नीचे आसन लगाकर लोगों की समस्या का समाधान करती है। मृत्यु से पूर्व रोगग्रस्त होने पर वह सुरंग में चली जाती है। वह जाकर गोश्त माँगा कर खाती है और गेरूआ वस्त्र उताकर बनारसी साड़ी पहनकर शीश में देख तृप्त हो दुनिया से विदा हो जाती है। मृत्यु होने पर लेखिका उसे पुनः गेरूआ वस्त्र पहन देती है लोगों की भीड़ माई जयकारा लगात हुए सुंरंग के निकट आ जाती है। इस कहानी में पति के मृत्यु से दुःखी कन्या पर सामाजिक वजनाएँ लाद दी जाती है। उसे एक कृत्रिम जीवन एवं साधवी बनकर जीवन जीने की आशा की जाती है। 'चीलगाड़ी' की नायिका राधिका ने अपनी जेठानियों के चेहरे विधवा होने पर सर मुडा लेने के कारण भयानक लग रहे है। राधिका की विवाह के कुछ समय बाद विधवा हो जाती है उस संबंध लेखिका कहती है कि '' इस लोक में जिस अभागिनी के कक्ष का ज्योतिपुंज सदा के लिए बुझ गया था, उसके लिए प्रकाश की हिन्दु शास्त्र में कोई व्यवस्था नहीं थी। ''[8] राधिका विधवा होने पर भी अपनी पढ़ाई पूरी कर ऐअर होस्टेस बन आत्मनिर्भरता से जीवन निर्वाह करती है। शिक्षा के प्रसार के कारण विधवाएं अब नौकरी कर स्वतंत्र जीवन में सक्षम हुई है। यह रूढ़िवादी परम्पराओं पर कुठाराघात है।

'ज्येष्ठा' कहानी में मध्यवर्गीय परिवार की दुःसाहसी नारी हरिप्रिया (पिरी) का चित्रण है उसकी जन्मकूंडली में ज्येष्ठा नक्षत्र और बृहस्पति की दशा होने से किसी भी लड़के के साथ विवाह नहीं हो पाता है। इसी अन्धविश्वास के कारण वह आजन्म वेश्या और सुहागिनी नारी के रूप में जीवन यापन करती रहती है। वह बिना विवाह किये अपने प्रेमी देवेश के साथ रहती है। ज्येष्ठा नक्षत्र उसके प्रेमी को भी लील जाता है। यह पिरी नामक रूपवती कन्या की दुःखद कथा है। किसी भी व्यक्ति की मृत्यु कन्या के नक्षत्र के कारण नहीं होती है जन्म –मुत्यु विधाता द्वारा पूर्व निर्धारित शाश्वत चक्र है। इस कहानी में सामाजिक अंध विश्वास को इंकित किया गया है।

'विप्रलब्धा' कहानी की प्रमुख नारी पात्र 'निम्मी' है। निम्मी का विवाह सुरेश से तय होता है। किन्तु निश्चित तिथि पर समाधि की मृत्यु से विवाह टल जाता है। ऐसा तीन वर्षों तब होता है फिर कई दिनों के बाद सुरेश नम्रतापूर्वक तिथि तय कर पत्र लिखता है। निम्मी उदण्डतापूर्वक उतर देती है कि इस बार विवाह की तिथि निश्चित करने से पूर्व बूढ़ों की जाँच करवा लेना । निम्मी उत्तर प्राप्त होने पर सुरेश गाँव की अनपढ़ कन्या से विवाह कर लेता है। निम्मी विमान परिचारिका की नौकरी करती है। अपने बिछड़े प्रेमी सुरेश की यादें लिये विप्रलब्धता जैसी नारी का जीवनयापन करती है। 'चिरस्वयंवरा' की नायिका रजनी दी प्राध्यापिका है। वह प्रौढावस्था में विवाह करने का निर्णय प्रधुम्न नामक युवक से प्रेम हो जाने के कारण लेती है। जो उससे उम्र में बहुत छोटा था। वह अपने विवाह के लिए वह सारा सामान अपनी शिष्या से मँगवाती है। वह अपनी प्रेमी के संग भीमताल से बोटिंग का प्रोग्राम बनाती है। उसी दिन उस वक्त डेंपर चकनाचूर हो गया है। वह चूर नहीं हुआ उसका सौभाग्य चकनाचूर हो गया। ''जिस दन्त पंक्ति को देखकर तुम मुग्ध हुए थे। वह मरीचिका मात्र थी । मेरे बाल भी सफेद है,

प्रधुम्न। इसी अप्रैल में मैं पूरे पचास की हो जाऊँगी। मेरी अँगुलियां गाठिया से टेढी है। मेरी कमर में हमेशा दर्द रहता है।''[9] उसे हिस्टीरिक्ल दौरा पड़ता है जब वह चैतन्य अवस्था में लौटी तो प्रधुम्न जा चुका था। प्रौढ़ावस्था में विवाह का स्वप्न टूटने से वह नींद की गोलियां खाती है। इस कहानी में नौकरी पेशा औरतों की समस्या को उजागर किया गया है नौकरी करते हुए कब उनकी उम्र निकल जाती है। उन्हें पता नहीं चलता जब प्रौढ़ावस्था में कोई उपयुक्त साथी न मिलने पर अकेलेपन और टुटने का शिकार होना पड़ता है। 'करिए छिमा' की नायिका हीरावती है वह नायक श्रीधर से प्रेम करती है अकेली प्रेमिका मातृत्व भार वहन करती है। किन्तु पुत्र की राशि अपने पिता से मिलते देख, प्रेमी की मर्यादा हेतु अपने पुत्र की हत्या कर देती है। अदालत में बच्चे के पिता के संबंध में पूछे जाने पर व्यंग्यपूर्ण शब्दों में कहती है। ''सरकार, आप तो दिन रात पहाड़ों को दौरा करते हैं। कई झरनों का पानी पीते होंगे। कभी आपको जुकाम भी हो जाता होगा। क्या आप बता सकते हैं कि किस झरने के पानी से आपको जुकाम हुआ है ?''[10] अपने बयान के कारण हीरावती कठोर कारावास का दण्ड भुगती है।[1] श्रीधर प्रायश्चित स्वरूप अपना जीवन स्वतंत्रता संग्राम में अर्पित कर देता है। वह अपने प्रेमी के चरित्र को बचा लेती है, त्याग करती है। इस कहानी में उसका निकलुष प्रेमिका का रूप दृष्टिगोचर होता है 'धुआँ' कहानी वेश्या की पुत्री रजुला पर केन्द्रित हैं। रजुला लखनऊ में जाकर बेनजीर के पास रहकर संगीत–नृत्य का प्रशिक्षण लेती है। एक दिन साहस बटोर कर वह बेनजीर से अपनी माँ के पास जाने के बारे में पूछती है तो प्रति उत्तर में बेनजीर कहती है '' पगली लड़की हमारे माँ–बाप कोई नहीं होते समझी। तेरा पेशा तेरी माँ, और तेरा हुनर तेरा बाप।''[11] वहीं पड़ोस के बंगाले में रहने छोटे सेठ से रजुला को प्रेम हो जाता है वह रोज शनि का मिलने आता था । एक दिन अचानक खिड़की से कूदने में चुक हो जाने पर नीचे गिरने से मृत्यु हो जाती है। रजुला उसकी याद में रोती – बिलकती रहती है एक दिन अवसर पाकर अपने नाना नेपाली बाबा के पास भाग कर चली जाती है। किन्तु वहाँ भी उसके मन में कूंठा रूपी धुनी जलती रहती है। जिसे वह चाह कर भी फूंक मारकर दूर नहीं कर पाती है।

'प्रतिशोध' कहानी में उच्चस्तीय अफसर शंकर अपनी पत्नी के प्रणय आदान –प्रदान में कृपणता के कारण कोयल नामक कॉलर्गल के चंगुल में फंसता है। वह कोयल से प्रेम करता है इसी बीच कोयल गर्भ से रहती है। शंकर उसके चरित्र पर शंका करता है। '' क्यों ? मैं क्यों करूं जी ? हाउ एम आई कन्सर्ड ? क्यों मैं ही तुम्हारा एक मात्र ग्राहक हुँ ?''[12] कोयल को अपनी गलती पर पछतावा होता है। शंकर विवाहित होने के कारण कोयल की अवैध सन्तान को अपनाने से इंकार कर देता है । कोयल आवेश में आकर मजबूरन आत्महत्या कर देती है। कोयल थोड़े से धनार्जन के कारण गलत व्यवसाय जहाँ पर जाने का मार्ग है किन्तु लौटने का मार्ग नहीं है। भारतीय समाज के इस विभत्स व्यवसाय को सामाजिक स्वीकृति नहीं मिली है। इसे धृणा की दृष्टि से ही देखा जाता है। ''जिलाधीश' युवा जिलाधीश 'सुमन श्रीवास्तव की कर्त्तव्यपरायणता और विवशता की कहानी है । जिलाधीश कुख्यात स्थान को सुधारने का बीड़ा उठाकर आई थी। सुमन श्रीवास्तव एक दिन अकेली दौरे पर जाती है तब उसकी गाड़ी खराब हो जाती है । रणधीर सिहं उसे अपनी हवेली में चलने को कहता है वह मजबूरी में वह साथ चली जाती है तो वह उसका बलात्कार करता है। जिलाधीश ने अपनी व्यथा का उल्लेख इन शब्दों में किया है – ''आज तक पुरूषों को कन्धे से कन्धा मिलाकर प्रत्येंक क्षेत्र में अपनी मौलिक प्रतिभा साहस और सूझबूझ से वह धड़ा–धड़ आगे बढ़ती चली गई थी। उस वीरांगना का गर्वोन्नत मस्तक आज पहली बार नारीत्व की सीमा प्राचीर से टकराकर चूर – चूर हो गया था।''[13] शिवानी जी ने यह बताया है जिलाधीश होते हुए उसका बलात्कार होता है। इतने बड़े ओहदे पर होते हुए भी अपने स्त्रित्व की रक्षा नहीं कर पाती है। वर्तमान समाज के यर्थाथ परिवेश के यह कहानी रेखांकित करती है। 'सती' कहानी की प्रमुख पात्र 'मद्रालसा सिंघडिया' है। चार महिलाएं प्रयागराज रेलवे स्टेशन से ट्रेन में चढ़ती है। मदालसा बताती है वर्ष भर पहले पति पर्वतारोही दल के साथ तूफान की चपेट में आ गये थे। उनका शव अब मिला है तो वह सती होने जा रही है। समाज सेविका उसे सती होने से मना करती है। वह मीठी–मीठी बातें कर सहानुभूति हासिल कर लेती है। वह अपने साथ लाया सुस्वाद भोजन तीनों सहयोगियों को खिलाती है और स्वयं उनका भोजन खाती है। जब वह सुबह उठती है तो देखती है कि सामान और मदालसा सती होने वाली स्त्री नहीं चोरनी है। वह पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करवाती है पर सती मैंया का कहीं पता नहीं चलता है। आज समाज में ऐसी घटनाएँ निरन्तर हो रही है। जब स्त्रियां जीवनयापन के लिए चोरी जैसे निकृष्ट कोटि के कर्म भी कर रही है।

निष्कर्ष :

शिवानी की कहानियों में विविध वर्गीय नारी पात्रों का यर्थाथ चित्रण हुआ है। परम्परागत नारी पात्र संस्कारों का पालन करने में अपना कल्याण मानते है। आधुनिक नारी पात्र पुरूष की अवेहलना, अविश्वास, अनैतिक संबंध को झेलने के

स्थान पर मुक्ति होने के लिए संघर्षरत है। वैधव्य नारी अपनी इच्छाओं को दमित कर देवी रूप धर समाज के सम्मुख उपस्थित होती है। स्त्रियाँ अपने व्यवसाय में मग्न है। अपने मनोकुकुल पति की इच्छा की इच्छा की पूर्ति के अभाव में विवाह की उम्र पार कर गई है, अथवा सामाजिक अन्धविश्वास के कारण अविवाहित रह (मिस्ट्रेस) बन जीवनयापन कर रही है। वैश्याओं का सामाजिक, मानसिक, आर्थिक, दैहिक और बौद्विक शोषण होता है वह अपनी आँखों में भविष्यहीनता लिये अपनी उपस्थिति अवश्य दर्ज कराती है। सामाजिक प्रगति के इस दौर में स्त्री की अस्मिता को खतरा है। किसी भी आयु वर्ग महिला का कहीं भी बलात्कार हो सकता है। नारी में अपराधिनी प्रवृत्ति भी यदा –कदा नारी चरित्रों में दृष्टिगोचर होती है जो चिंता का विषय है। शिवानी जी ने नारी मन को झाँक कर उनकी मनः स्थिति को मनौवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। शिवानी जी नारी को पुरूष की अनुचरी के रूप में नहीं सहचरी के रूप में देखती है और स्वस्थ समाज के निर्माण में नारी की अहंम एवं केन्द्रीय भूमिका को स्वीकार करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. शिवानी, 'चिरस्वयंवरा', राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पांचवा संस्करण 2017, पृष्ठ 14–15
2. शिवानी, संपूर्ण कहानियों भाग 2, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पहला संस्करण 2013 पृष्ठ 27
3. शिवानी, 'भिक्षुणी', राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पांचवा संस्करण 2016, पृष्ठ 46
4. शिवानी, संपूर्ण कहानियों, भाग 1, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पहला संस्करण 2014, पृष्ठ 155
5. शिवानी, संपूर्ण कहानियों, भाग 2, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पहला संस्करण 2013,पृष्ठ 69
6. शिवानी, 'मधुयामिनी', राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पांचवा संस्करण 2017, पृष्ठ 18
7. शिवानी, मेरी प्रिय कहानियों, राजपाल एण्ड सन्ज नई दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ 99
8. शिवानी, 'संपूर्ण कहानियों' भाग 2, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पहला संस्करण 2013, पृष्ठ 235
9. शिवानी, 'छब्बीस कहानियों', वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, पृष्ठ 353
10. शिवानी, संपूर्ण कहानियों, भाग 2, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2013, पृष्ठ 92
11. शिवानी, 'चिरस्वयंवरा' राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पांचवा संस्करण 2017, पृष्ठ 14–15
12. शिवानी 'करिए छिमा', राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पांचवा संस्करण 2011, पृष्ठ 71